वेद–विहित मानवीय मूल्य और राष्ट्रीय चेतना

***डॉ. छगन लाल महोलिया**

शोध सारांश

समस्त भारतीय ज्ञान–विज्ञान का मूल स्रोत वैदिक वाङ्मय ही है। अतः मानवीय–मूल्य संबंधी भारतीय अवधारणा का मूलाधार वैदिक साहित्य में दृष्टिगत होता है। वैदिक ऋषियों ने मानव–जीवन के सार्थक और सर्वांगीण विकास के लिए मानव–मूल्यों का निर्धारण किया जो मानव–मात्र को समुचित मार्गदशन प्रदान करने में सक्षम हैं। संहिता–ब्राह्मण–आरण्यक–उपनिषदादि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में मानव विचार तथा व्यवहार को प्रभावित करने वाले अनेकानेक मूल्यपरक सूत्र ओतप्रोत हैं जों जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़े हुए है–

सामाजिक मूल्य

वेदों में सामाजिक समरसत्ता को प्रेरित करने वाले मंत्र द्रष्टव्य हैं जो व्यष्टि–समष्टि के बीच सन्तुलन के सामाजिक मूल्य की स्थापना करते हैं।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास ऐत

इनमें कोई छोटा–बड़ा नहीं है, अतः सभी के प्रति समानता का व्यवहार करना चाहिए।

यः पृणाति स ह देवेषु गच्छति

जो दान देता है वह देवत्व की प्राप्ति करता है, अतः दानशीलता को अपनाना चाहिए।

केवलाद्यो भवति केवलादी

स्वयं अकेले ही भोजन करने वाला पाप का भागी होता है अतः स्वार्थी बनकर केवल स्वयं के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए और सबके साथ मिल–बाँट कर संसाधनों का उपभोग करना चाहिए।

पुमान् पुमांसः परिपातु विश्वतः

एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की सब ओर से रक्षा करें, अतः परस्पर रक्षण–संवर्द्धन की भावना का विस्तार होना चाहिए।

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि

जिन्हें मैं देखता हूँ या जिन्हें नहीं देखता हूँ, उन सबके प्रति मुझमें सुमति उत्पन्न हो।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे

मैं मित्र की दृष्टि से सभी प्राणियों को देखूँ।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।।

समाज में सबको साथ लेकर चलने की इसी भावना से सामाजिक उत्थान संभव है। इस प्रकार के वेदमंत्र सामाजिक मूल्यों की महत्ता सिद्ध करते हैं।

राजनीतिक मूल्य और राष्ट्र चेतना

अथर्ववेद में राष्ट्र की उत्पत्ति तथा राष्ट्र–भक्ति का उल्लेख मिलता है।

"भद्रमिच्छन्तं ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपसेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसं नमन्तु।।

समग्र जनता का कल्याण करने की इच्छा से ऋषियों ने प्रारम्भ में दीक्षा लेकर तप किया, इससे राष्ट्र, बल और ओज का निर्माण हुआ, अतएव सब विबुध इस राष्ट्र की भक्ति करें। वेदों के अनुसार इस राष्ट्र की न्यायपूर्वक रक्षा का दायित्व 'क्षत्रिय' को सौंपा गया, जिसे आधार बनाकर स्मृतिकारों ने राजधर्मानुशासन का विधान किया।[9]

इसी प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण की यह पंक्ति –

.....'पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाः एकराट्' इति पृथ्वी पर समुद्र पर्यन्त एक राष्ट्र की उद्घोषणा करती है।

'इला सरस्वती मही तिस्रो देवीर्ययोभुवः' मातृभूमि, मातृ–संस्कृति और मातृभाषा ये तीनों सुखद होती है। 'पृथिवि, स्योना अनृक्षरा निवेशनी भवे। (हे मातृभूमि! तुम हम सबके लिए सुखद शत्रुरहित ओर निवासप्रद बनी रहो) 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।)

"आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायेतामाराष्ट्रे राजन्यः।
शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।।

हे ईश्वर, हमारे राष्ट्र में ज्ञानसम्पन्न बुद्धिजीवियों का तथा अस्त्र–शस्त्र–संचालन में निपुण, शत्रुओं का दमन करने वाले सैनिकों का जन्म होता रहे। उपर्युक्त मंत्रों के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि वेदो में राष्ट्र तथा राज्य की एकता से सम्बन्धित राजनीतिक मूल्यों का समावेश किया गया है।

आध्यात्मिक मूल्य

भारतीय संस्कृति आत्मतत्वप्रधान संस्कृति है। यथा – **'इदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु'** अर्थात् यह आत्मा मनुष्यों में अमर–ज्योति के रूप में है। इसी प्रकार आत्मतत्त्व की व्यापकता के विषय में वेदोक्ति प्रसिद्ध हैं – **'इदं सर्वं यदयमात्मा' 'आत्मैवेदम् सर्वम्' 'अयमात्मा ब्रह्म'**

वैदिक ऋषियों ने परब्रह्म को सत्य–रूप में प्रतिष्ठित किया है। यथा – 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'।

वह परब्रह्म (सत्य) एक ही है, उसके अनेक रूप विद्वानों की विविध व्याख्याओं के कारण हैं। इस प्रकार वैदिक दृष्टि धर्म के नाम पर किसी विवाद को मान्यता नहीं देती, अपितु – ''सुगा ऋतस्य पन्था'' अर्थात् सत्य का मार्ग सुगम एवं सरल है, कहकर मानव–जाति को सत्य के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

"ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

यह सच्चिदानन्द परमात्मा अपने आप में परिपूर्ण है। यह संसार भी उस परमात्मा से परिपूर्ण है, क्योंकि उस पूर्णब्रह्म परमात्मा से ही यह पूर्ण संसार प्रकट हुआ है, पूर्ण परब्रह्म से पूर्ण संसार की सृष्टि होने पर भी वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा पूर्ण ही अवशिष्ट रहता है। अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चर–अचरात्मक जगत् दृश्यमान है, इन सबका सर्वाधारनियन्ता परब्रह्म ही है –

"ईशावास्यमिदम् सर्वम् यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

यह दृश्यमान जगत् पूर्ण परब्रह्म से परिव्याप्त है, अतः त्यागभाव से कर्त्तव्यपालन के लिए ही विषयों का यथाविधि उपभोग करना चाहिए। परमेश्वर की उपासना के लिए कर्मों का आचरण किया जाए क्योंकि ये भोग्यपदार्थ परमेश्वर के हैं, उन्हीं के लिए इनका उपभोग करना चाहिए और लोभ लालच से दूर रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति में परमात्म तत्त्व की प्राप्ति के लिए त्याग एवं तपोमय जीवन का निर्देश दिया गया है। यथा – ''न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः। अर्थात् कर्म से नहीं, प्रजा से नहीं, धन से नहीं, अपितु त्याग से कोई अमृतत्व को प्राप्त होते है। वैदिक धर्म की आश्रम–व्यवस्था का उद्देश्य त्याग करने की शिक्षा देना है। त्याग की भावना अन्तःकरण से होनी चाहिए। बाह्य त्याग, दिखावा और दम्भ का कारक है। अन्तः त्याग से ही व्यष्टि एवं समष्टिगत

कल्याण होता है। भारतीय संस्कृति की मान्यतानुसार कर्म ही जीव के आवागमन चक्र में बन्धन का कारण है अतः वेद मनुष्य को अनासक्त भाव से कर्म करने का उपदेश देते हैं, यथा

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजी विषेच्छेत् शतं समाः,
एवं त्वयि नान्यथे तोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।

अनासक्त भाव से किया गया कर्म मनुष्य को बन्धन में नहीं बाँधता है और मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति करता है। इस प्रकार अनासक्त भाव से किया गया कर्म जीव को पुनर्जन्म से भी मुक्त करता है। इस प्रकार वैदिक संस्कृति आध्यात्मिक मूल्यों से समृद्ध है, जो विश्व कल्याणार्थ उन्नत जीवन–दर्शन देती है। उपर्युक्त मूल्य विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद–विहित मानवीय मूल्यपरक अवधारणाएँ लोक कल्याणात्मक हैं और इन मूल्यों की सार्थकता आज भी बनी हुई है।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद – 5/60/5
2. वही – 1/125/5
3. ऋग्वेद – 10/117/6
4. ऋग्वेद – 6/75/14
5. अथर्ववेद – 17/1/7
6. यजुर्वेद – 36/18
7. ऋग्वेद – 10/191/2, 4
8. अथर्ववेद – 19/41/1
9. मनुस्मृति – 7/2
10. ऋग्वेद – 1/13/9
11. वही – 1/22/15
12. अथर्ववेद – 12/1/12
13. यजुर्वेद – 22/22
14. ऋग्वेद – 6/9/4
15. बृहदारण्यकोपनिषद् – 2/4/6
16. छान्दोग्योपनिषद्– 7/25/2
17. बृहदारण्यकोपनिषद् – 2/5/29
18. बृहदारण्यकोपनिषद् – 5/1/1
19. ईशोपनिषद्, 1/1
20. कैवल्योपनिषद् – 2/3
21. यजुर्वेद – 40/2

***व्याख्याता (संस्कृत)**
महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भरतपुर, राजस्थान